स्मृतिसुमन (आचार्य शिवनारायण शास्त्री का स्मरण)

'सदैव पूजनीय.....आचार्य

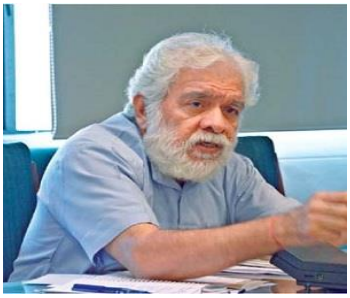

आचार्य चान्द किरण सलूजा
निदेशक संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान नई दिल्ली

आचार्य **शिवनारायण शास्त्री** अपने-आप में एक सम्पूर्ण संस्था थे। वे सिद्ध पुरुष थे। किसी के प्रति 'द्वेष' तो न रखते थे पर हाँ 'राग' अवश्य ही बहुत ही रखते थे। मित्र ऐसे कि बात-बात पर 'स्नेह' टपकता था.... मैंने उन्हें आजीवन केवल दो ही कर्मों में ही लीन पाया.... वह भी निष्काम भाव से... एक, अध्ययन-अध्यापन.. दूसरे, समाज-सेवा। मुझे नहीं लगता कि उनमें कोई दूसरा चिन्तन प्रविष्ट भी हो पाया। वे योगी थे..... वे कहा करते थे 'देखो चान्द!.... मेरे लिए वह दिन है जब मैं काम करता हूँ, और वह रात्रि जब मैं सोना चाहता हूँ... और मैंने उन्हें प्रायः 'कर्म' में ही लीन पाया..... मुझे स्मरण आ रहा है उस 'पूस' की रात का.... वे अपनी 'कर्म-समाधि' में लीन थे..... मैं भी समीप ही बैठा था..... किसी 'कुक्कुर-शिशु' का क्रन्दन सुनाई दिया.... मैंने कहा 'कोई छोटा कुक्क्कुर-शिशु' रो रहा है..... उन्होंने भी झट से लिखना कुछ बन्द किया..... अरे हाँ कोई 'दीनू' रो रहा है.... वे व्यथित-सा होते हुए बोले..... रात्रि के प्रायः १२.३० बजे थे.... 'चलो पण्डित, उसे ढूँढते हैं'..... मोमबत्ती का प्रबन्ध किया गया..... ध्वनि का अनुसरण करते हुए घर से बाहर आए..... यह देखने-सुनने का प्रयास किया कि ध्वनि कहाँ से आ रही है..... बाहर एक सूखा नाला-सा था.... प्रवेशद्वार के बाहर के थले के नीचे सूखे नाले में से ध्वनि आ रही थी..... प्रायः कुछ समय पूर्व ही जन्मा 'कुक्कुर-शिशु' ही क्रन्दन कर रहा था.... अत्यधिक शीत-लहर थी..... मैंने उनकी आँखों में अविरल अश्रु देखे..... वे भी सुबकने लगे.... उसे उठा अपने वक्ष से लगा बोल उठे.... 'बेचारा दीनू, मेरा दीनू'..... बाद में उसका नाम ही हो गया 'दीनू'..... 'उसे कम्बल में लिटाया गया'.... 'कुछ गर्म पानी से सिकाई की गई'..... 'दूध गर्म किया गया'..... 'पिलाया गया'.... और फिर..... 'सुला दिया गया'..... दीनू भी कुछ-कुछ आवाज़ करते हुए गहरी नींद में सो गया..... प्रातः पुनः उसकी परिचर्या प्रारम्भ हुई..... धीरे-धीरे 'दीनू' घर का अभिन्न सदस्य बन गया..... उनका कुछ समय अब दीनू के साथ भी व्यतीत होने लगा..... परन्तु 'कर्म-समाधि' इससे बाधित नहीं हुई। लगभग छः मास में 'दीनू' संसार से विदा हो गया..... उसके संस्कार के लिए समीप के खाली पड़े मैदान में गढ्ढा खोद कर नमक आदि डाल कर उसका संस्कार किया गया..... उस समय उनकी आँखों में 'टीस' को अनुभूत

किया जा सकता था..... न जाने कितनी इस भांति की घटनाएँ उनके जीवन में मैंने साक्षात् अनुभूत की हैं.... पुस्तकों के साथ उनका प्रेम..... कि एक बार मुझे पुस्तक का पृष्ठ मोड़ते हुए देखकर कठोर दण्ड दिया.... परन्तु दिए गए दण्ड की वेदना को उन्होंने स्वयं भी अनुभूत किया..... अथाह प्रेम का सागर थे वे..... शरीर के कष्टों को भी वे आनन्द के साथ जीते थे..... पुस्तक और समाज ही उनके जीवन का आधार बन गए थे..... अन्तिम दिनों में 'आपरेशन-थिएटर' से बाहर आकर रोग-शैय्या से मुझे देखते हुए कहने लगे.... बेटा, मेरी पुस्तकों को तुम्हें ही देखना है..... कभी-कभी, जब वे बोलने की स्थिति में नहीं रहे,.... लिखने का संकेत दिया और लिखा कि क्षीर स्वामी ने मुझे स्वप्न में निरुक्त को नई दृष्टि से देखने के लिए कहा है..... उनके लिए यह सहना कठिन था कि 'कोई कष्ट में है'..... उनकी सम्पूर्ण 'सम्पत्ति' मानों समाज की थी..... यहाँ तक कि चिकित्सा-छात्रों के लिए..... 'देह' भी 'दान' के रूप में दे दी जाए..... विनम्र प्रार्थना लिख कर दे गए ..... सच, उन्होंने धर्म को अपने जीवन से रूपायित किया..... संवेदना क्या होती है, उन्होंने जीकर दिखाया..... 'जिज्ञासा' का उत्तर 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'..... इसे उन्होंने अपने जीवन के पर्याय के रूप में दिखाया..... यह सच है कि.....

वे पूज्य थे, पूज्य हैं और पूज्य रहेंगे.....

स्मृतिसुमन (आचार्य शिवनारायण शास्त्री का स्मरण)

विद्वान् व दिव्य स्वरूप..... आचार्य

शिव कुमार
नांगलोई, दिल्ली

आचार्य शिवनारायण शास्त्री जी के पिताश्री ज्योतिषाचार्य शास्त्री श्रीनिवास भारद्वाज (हमारे परिवारिक गुरू) के देह त्यागने के ग्यारह – बारह साल बाद मैं उनके संपर्क में तब आया जब विधाता के विधान से इनकी बुआ की पोती इंदु बाला से मेरी शादी हुई। बाद में ये संपर्क प्रगाढ़ होता गया।

गुरु पुत्र होने के कारण मैं इनमें गुरु की छवि देखता था तथा मेरी पत्नी इनमे अपना ताऊ देखती थी, बचपन में उनकी गोद में जो खेली थी। ये भी मुझे मन से अपना आशीर्वाद देते और मेरी पत्नी को पुत्री की तरह प्यार देते। दोनो संबंधों को इन्होंने खूब निभाया।

एक बार की बात है कि मैं अध्यापक की लिखित परीक्षा पास करके इंटरव्यू देने के लिए दिल्ली में इनके पास एक दिन पहले रात को रुकने के लिए चला गया। सुबह नाश्ता करके इंटरव्यू के लिए जब चलने लगा तब इन्होंने मुझसे पूछा "क्या आपने DTC में किराए के लिए पैसे अलग से ऊपर की जेब में रख लिए ?"

"जी मैने तीन रुपए रख लिए हैं" मैंने उत्तर दिया।

मेरा उत्तर सुनकर इन्होंने कहा "आपको मुबारक हो तीन आपके लिए बहुत अच्छा है"

मैं सोचता रह गया पर समझ नहीं आया।

समझ में तब आया जब मेरा इंटरव्यू में चयन कर लिया गया।

इसी प्रकार एक बार मैं और मेरा मित्र हुडा के प्लॉट के लिए पैसे जमा करके आशीर्वाद लेने इनसे मिलने चले गए। मिलने के बाद जब चलने लगे तो शास्त्री जी ने अचानक मुझे कहा कि आपको प्लॉट की बहुत बहुत बधाई। मैंने कहा अभी तो हमने केवल फॉर्म ही भरा है। लॉटरी निकलनी अभी बाकी है। (मैंने फॉर्म अपनी मां के नाम से भरा था)

उन्होंने फिर से दोहराया "फिर भी आपको बधाई हो।"

जब लॉटरी कि लिस्ट लगी तो मेरी मां का नाम लिस्ट में सम्मिलित था।

माता सरस्वती द्वारा प्रदत्त उनका इस दिव्य स्वरूप का मैंने कई बार अनुभव किया। तीन महीने के लगभग ऐसी दिव्य आत्मा के साथ मैक्स हॉस्पिटल में रह कर बहुत कुछ अनुभव किया। उनके इस स्वरूप को बहुत कम लोगों ने देखा और समझा होगा। जीवन में उनका साथ पाया इसके लिए परमपिता परमेश्वर की अपार कृपा समझता हूं तथा प्रार्थना करता हूं कि समाज के लिए तन, मन और धन न्योछावर करने वाली ऐसी दिव्य आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें।

स्मृतिसुमन (आचार्य शिवनारायण शास्त्री का स्मरण)

स्थितप्रज्ञता को नमन.....आचार्य

प्रोफेसर डॉ (मेजर) बुद्धदेव आर्य विद्यालंकार गन्धर्व
निलम, भिवानी

विराट व्यक्तित्व के धनी: पं. शिवनारायण शास्त्री का जीवन और उनकी कार्य पद्धति निरन्तर समाज के प्रति उनके समर्पण भाव का संकेत करती है। मैं उनका जीवन किसी धर्म, जाति वर्ग, रंग, सम्प्रदाय और मतवाद के दायरों में नहीं समेटा जा सकता मैं उनमें मानवनिष्ठ भारतीय जीवन और दर्शन की झलक ही देख पाता हूँ। उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को उनमें चरितार्थ होता हुआ देखा जा सकता है। सामान्यतः देखने में आता है कि व्यक्ति जब ग्रामीण परिवेश से शहरी वातावरण में जाकर जीवन यापन करने लगता है तो वह ग्राम से कस्बे को कस्बे से शहर को शहर से महानगर को अधियान देता है। शास्त्री जी के व्यक्तित्व में इसके विपरीत आचरण दिखाई देता है। आप दिल्ली में अपनी सेवा सम्पन्नता के उपरान्त उस महानगर को बिल्कुल निष्कामिता के साथ छोड़कर अपनी जन्म स्थली पर आकर रहने लगे। आपको यह महानगर को छोड़कर भिवानी में आकर जीवन के अन्तिम उत्तरार्द्ध में निवास करना सोद्देश्य था। उनके मन में एक तड़प थी कि अपनी जन्मभूमि पर उगती पीढ़ी को ज्ञान की गंगा का अमृतपान करवाया जाये। अपनी इसी भावना के चलते आपने सीमित साधनों के चलते हुए भी निरन्तर एक गुरुकुल या पाठशाला की स्थापना के लिए पुरजोर कोशिश की, यह अलग बात है कि आधुनिकता की चकाचौंध में भटके युवा को ज्ञान की इस गूढ़ साधना की परम्परा के प्रति आकृष्ट करना बहुत ही दुष्कर कार्य है। जब समाज में वरीयता का मूल्यांकन अर्थ के आधार पर होता हो ऐसे में युवा को संस्कार, संस्कृत और संस्कृति की बाते बेमानी जान पड़ती है। बस समाज की इस बदलाव की गति को उनका विद्वतापूर्ण मानस स्वीकार नहीं कर पा रहा था। इसीलिए वे बार- बार ज्ञान की समृद्ध, परम्परा का सूत्र निरन्तर समाज में प्रतिष्ठित करते रहे इसके लिए जो कुछ भी सम्भव हो वह सब कुछ करने के लिए बिना किसी शर्त के सदैव उद्यत थे। मैंने अनेक बार वार्तालाप में उनके अन्तर्मन की इस तड़फ को निरन्तर महसूस किया है।

शास्त्री जी से जब भिवानी में मेरी पहली भेंट हुई तो उनमें पितृतुल्य वत्सलता का भाव मैंने पाया। उनके संसर्ग में ज्ञान के आलोक की अनोखी अनुभूति को मैंने सदैव अनुभव किया है। उनसे लम्बे समय तक किसी भी शास्त्रीय, सांसारिक, व्यावहारिक, ज्ञान के किसी विषय पर सम्बी और अन्तहीन चर्चा की

जा सकती थी। ऐसी चर्चा के प्रसंगों में मुझे हमें अपनी क्षुद्रता का निरन्तर अनुभव होता था। इस सत्य को मैं निस्संकोच स्वीकार करता हूँ। आप ज्ञान उस उच्चतम शिखर पर प्रतिष्ठित थे जहाँ व्यक्ति में स्थितप्रज्ञता का आविर्भाव होता है। इसीलिए वे कभी भी कटु बातों को कहने में जरा सी हिचक नहीं महसूस करते थे। अत्यधिक चहल पहल तथा शोर- शराबे के वातावरण में भी उन्हें एकनिष्ठता के साथ अध्ययन मनन के कार्य में पूरी निमग्नता से लगे हुए मैंने अनेक बार पाया था। उनकी ऐसी विरल स्थितप्रज्ञता को मैं नमन करता हूँ।

अपनी भावना के प्रति उनकी सजगता अनुकरणीय थी। वे भावावेशित नहीं होते थे वरन् भाव व विचार में सामंजस्य साधने में परले दर्जे की कुशलता लिये हुए थे। 'कुसुमेश्वर महादेव' मन्दिर के निर्माण की प्रत्येक कल्पना के प्रति वे पूरी तरह सजग मैंने उन्हें पाया। अपना पूरा समय वे निरन्तर उसके निर्माणकाल में लगाते ही नहीं' थे अपितु उसके कण-कण में उनकी परिकल्पना की सजीवता के दिग्दर्शन भी किये जा सकते हैं। ऐसे स्थान जिसके कण-कण में व्यक्ति रचा-बसा हो उसे पूर्णतः किसी अन्य को सौंप देना बिना किसी प्राप्ति की कामना के उनकी निष्कामिता का अनन्य उदाहरण है। जीवन के अन्तिम पड़ाव में भी उन्होंने कभी शिथिलता को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। हर छोटे बड़े कार्यक्रम में सहजता से पहुँच जाना और उनको प्रत्येक रचना का सूक्ष्मता से अध्ययन एवं निरीक्षण करना उनके स्वभाव का अंग था। उसमें जो श्रेष्ठ एवं ग्राह्य जान पड़ता उसे दूसरे स्थानों पर प्रसारित करने के लिए सदैव उत्सुक रहते थे। वास्तव में, उनको व्यक्तित्व इतना विराट था कि जिसके एक-एक पक्ष पर बहुत कुछ निरन्तर लिखा जा सकता है। ऐसे इस प्रयास की शुरूआत के लिए मेरी ओर से कोटिशः साधुवाद एवं शुभ-कामनाएँ।

स्मृतिसुमन (आचार्य शिवनारायण शास्त्री का स्मरण)

गहरी बातें और सरल शब्द .....आचार्य

श्री जगतनारायण

बात उन दिनों की है जब परमादरणीय शास्त्री जी ऋग्वेद का भाष्य लिख रहे थे। उनको इस बात का भली भांति पता था कि जगत नारायण चाहे संस्कृत का जानकर न भी हो परन्तु वह श्रोता के रूप में जिज्ञासु अवश्य है। वे मुझे प्रतिदिन नए नए प्रसंग सुनाते थे। उनके द्वारा सुनाए जाने वाले प्रसंग इतने रोचक होते थे कि मेरे मन में कई बार उन कहानियों का नाट्य रूपांतर करने का विचार आता। आज भी मुझे राजा हरिशचंद्र का वह प्रसंग याद है।

जिसमें राजा के द्वारा किसी अन्य के पुत्र की बलि देने के लिए तैयार किया जाता है। इस प्रसंग में शिशु की चित्कार का कारुण्यपूर्ण दृश्य मेरे मन को आज भी रुला देता है। शास्त्री जी की ये विशेषता थी कि बहुत गहरी बात को सरल शब्दों से एक सामान्य व्यक्ति के अन्तर्मन में उतार देते थे। इसी प्रकार के प्रसंग उन्होंने दुर्गा सप्तशती की भूमिका को लिखते समय सुनाए, जिनके प्रतीक कितने सटीक हैं जो उनकी पुस्तक को पढ़ने से ही पता चल सकता है।

शास्त्री जी जितने बड़े विद्वान थे उतने ही दानवीर भी थे। एकबार की बात है कि भिवानी सिटी स्टेशन के पास उनकी जमीन पर वे कुछ सार्थक करना चाहते थे। उस पर हमने पूज्य शंकराचार्य माधवाश्रम जी को भी आमंत्रित कर पूजन कराया था।

शास्त्री जी ने स्व. चंद्र कुमार गोसाई द्वारा आयोजित एक नेत्रहीनों के कार्यक्रम में उस जमीन पर अंध दिव्यांगों हेतु हॉस्टल के निर्माण के लिए दान देने की घोषणा की। इतने भर से दो चार दिनों के बाद कुछ नेत्रहीन शास्त्री जी के घर पर आ खड़े हुए और शास्त्री जी से कहा कि वह जमीन आप हमें दो,शास्त्री जी ने पलट कर पूछा कि आप इसपर हॉस्टल कैसे बनाओगे ? वे बोले हम लोग मिलकर चंदा एकत्रित करेंगे। शास्त्री जी ने पूछा कि आप का किस बैंक में खाता है ? वे बोले जी खाता तो हमारा नहीं है। उन लोगों का न तो कोई खाता था और न ही कोई संस्था। जब वे शास्त्री जी द्वारा किए गए प्रत्येक प्रश्न से निरुत्तर हो गए तब ही वे वहां से वापिस गए। कहने का तात्पर्य है कि यदि कोई शास्त्री जी को भोला समझते थे तो वे गलतफहमी के ही शिकार थे। अन्त में उस जमीन को आस्था दिव्यांग विद्यालय के लिए श्रीमती सुमन शर्मा जी व श्री विजय शर्मा जी को दानस्वरूप दी गई, जिस पर आज दिव्यांगो का विद्यालय सफलतापूर्वक चल रहा है। शास्त्री जी एक विराट व्यक्तित्व के धनी थे जो बहुमुखी प्रतिभा के साथ साथ कई भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान थे।

स्मृतिसुमन (आचार्य शिवनारायण शास्त्री का स्मरण)

अनवरत चलती लेखनी .....आचार्य

अनीता नाथ

इस लोक में मानव देह का अवतरण सृष्टि की सबसे खूबसूरत रचना है। इस अवतरित देह के साथ सब अपना-अपना जीवन अपने तरीके से जीते हैं, परन्तु कुछ लोग ऐसे भी है, जो अपना जीवन महामानव के रूप में जी जाते हैं, और संसार में रहकर भी निर्लिप्तता के भाव से अपने आप को एक आम आदमी से अलग एक महामानव की श्रेणी में खड़ा कर देते हैं, ऐसे ही एक महामानव संतपुरुष ,शांत स्वभाव के धनी संस्कृत के महाज्ञानी पंडित शिव नारायण शास्त्री जी से लगभग 20 वर्ष पूर्व मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

यूं तो जीवन में अनेक लोगों से मिलना हुआ, परंतु शास्त्री जी के व्यक्तित्व ने जितना मुझे प्रभावित किया, वो शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। अनेकों कार्यक्रमों में उनकी उपस्थिति ने सभी को अपनी स्नेहिल व आशीर्वाद पूर्ण निगाहों से सभी को अपनी ओर आकर्षित किया, हजारों की भीड़ में भी उनकी अनवरत चलती लेखनी सभी के लिए कौतूहल का विषय रहती थी, इसी शैली ने मुझे भी हमेशा आकर्षित किया। इतने बड़े व्यक्तिव से जब भी मिलना हुआ हमेशा एक सकारात्मक ऊर्जा और सोच के साथ उन्होंने हर बात और कार्य को सराहा और हर परिस्थिति को आत्मसात किया। नकारात्मकता व आलोचना से कोसों दूर उनका व्यवहार और स्वभाव हर किसी के लिए प्रेरणा पुंज रहा। उन्हें देखकर मुझे हमेशा यह एहसास हुआ कि अपनी मातृभूमि और परम्परा अपनी संस्कृति और प्राचीन पुरातन संस्कृत भाषा के प्रति कोई इतना जुनून कैसे रख सकता है ? कि जीवन की अंतिम सांस तक समर्पण भाव से उसके लिए जीता रहे है। पंडित शिव नारायण शास्त्री जी के इस महामानव स्वरूप को किंचित मात्र भी शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। उनके जैसा असाधारण व्यक्तित्व कभी किसी के बीच से नहीं जाता आज भी वह अपने शालीनता भरी मुस्कान के साथ हम सबके हृदय में बसते हैं।

स्मृतिसुमन (आचार्य शिवनारायण शास्त्री का स्मरण)

सरल लेखन और सहज दान ..... आचार्य

महंत अशोकगिरि जी

पीठाधीश्वर, जहांगिरि आश्रम

श्री शिव नारायण शास्त्री हरियाणा प्रांत के भिवानी मंडल में एक विद्वान ब्राह्मण परिवार में जन्मे शास्त्री जी के पिता श्री श्रीनिवास शास्त्री, ज्योतिषाचार्य माता श्रीमती सीतादेवी थीं, ये प्रारंभिक शिक्षा के लिए काशी चले गए तथा काशी से ही संपूर्ण शिक्षा प्राप्त की, उन्होंने संस्कृत जगत के लिए अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया संस्कृत की उनके अनेक टीका ग्रंथ जिनका विवरण इस प्रकार है।

- **शिवनारायण शास्त्री के प्रकाशित ग्रन्थ**

१ निरुक्तमीमांसा, पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र० एवं हरजीमल डालमिया पुरस्कार, दिल्ली से सम्मानित।

२ वैदिक वाङ्मय में भाषाचिन्तन, पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र०, से सम्मानित।

३ गीताभाष्यनवाम्बरा, पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र०, द्वारा पुरस्कृत।

४ निरुक्त १-४ तथा ७ अध्याय (हिन्दी में भाष्य)। ५ निरुक्त १-२ तथा ७ अध्याय (छात्रोपयोगी)।

६ तर्कसंग्रह-तारोदय।

७ सबालप्रबोधन्युपन्यास- तर्कसंग्रहः।

८ ईशोपनिषद्भाष्यनवाम्बरा, १-२ अध्याय, शाङ्करभाष्य व्याख्या।

९ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, भवतोषिणी टीका, भ्वादिगण।

१० काव्यादर्शप्रसादिनी, १-३ भाग।

११ महाभाष्यप्रदीपप्रकाश, १-२ आह्निक।

१२ प्रश्नोत्तररत्नमालिका, हिन्दी काव्यानुवाद और अङ्ग्रेजी अनुवाद सहित।

१३ दुर्गातत्त्वविमर्शः, मूल स्व-रचित संस्कृत श्लोकों में और स्वोपज्ञ हिन्दी टीका।

१४ श्रीसत्यनारायणव्रतकथा काव्य, हिन्दी, दोहा- चौपाई में।

१५ गीत्तायन - श्रीमद्भगवद्गीता की हरियाणवी भाषा में काव्यात्मक प्रस्तुति।

१६ श्रीमद्भगवद्गीता (सान्वै) हरियाणवी मैं गद्यात्मक व्याख्या।

१७ ब्रह्मसरोवर गीता काव्य- हिन्दी चौपाई में।

१८ श्रीरुद्राष्टाध्यायी सान्वय हिन्दी व्याख्या।

१९ सायणाचार्यकृत ऋग्वेदभाष्यभूमिका, हिन्दी अनुवादसहिता।

२० ऋग्वेदसंहिता हिन्दी काव्य भाष्य प्रथम अष्टक।

- **प्रकाश्य ग्रन्थ**

१ ऋग्वेदसंहिता हिन्दी काव्य भाष्य २-८ अष्टक।

२ ऋग्वेदसंहिता का छान्दस विवेचन तथा उसके परिप्रेक्ष्य में मन्त्रों का सस्वर पाठशोध, १-८ अष्टक।

३ ऋग्वेदसंहिता- सायणभाष्यम्, प्रथमोऽध्यायः, हिन्दी अनुवादसहितः।

४ वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी, भवतोषिणी, हिन्दी व्याख्या, नवगणी।

५ महाभाष्यप्रदीपप्रकाश, हिन्दी व्याख्या, ३-४ आह्निक

६ महाभाष्यदीपिकाप्रकाश, हिन्दी व्याख्या, १-४ आह्निक

७ तर्कसंग्रहटीकास्तबकम्, प्राचीन अर्वाचीन १७ और अपनी टीकाओं सहित सम्पादित।

८ शिक्षावेदाङ्ग, अंग्रेजी अनुवाद सहित, ३ भागों में।

९ धर्मशास्त्रम्, हिन्दी भाषानुवाद सहित, २० स्मृतियाँ, प्रथम भाग।

ऐसे ही अनेक ग्रंथों का अनुवाद किया तथा अनेक प्रतिष्ठान एवं संस्था द्वारा पुरस्कृत हुए।

१ निरुक्तमीमांसा, पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र० एवं हरजीमल डालमिया पुरस्कार, दिल्ली से सम्मानित।

२ वैदिक वाङ्मय में भाषाचिन्तन, पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र०, से सम्मानित। १३ गीताभाष्यनवाम्बरा, पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र०, द्वारा पुरस्कृत।

- **साहित्य-सम्मान**
    - पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र० (निरुक्तमीमांसा पुस्तक पर)।
    - हरजीमल डालमिया पुरस्कार, दिल्ली से सम्मानित (निरुक्तमीमांसा पुस्तक पर)।
    - पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र०, द्वारा सम्मानित (वैदिक वाङ्मय में भाषाचिन्तन पुस्तक पर)।
    - पुरस्कारयोजनासमिति, उ०प्र०, द्वारा पुरस्कृत (गीताभाष्यनवाम्बरा पुस्तक पर)।

- **संस्कृतसाहित्यसेवा सम्मान,**
    - 1993, संस्कृत अकादमी, दिल्ली।

- स्वामी हरिहरानन्द (करपात्र स्वामी) पुरस्कार, 2000, श्री सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि०वि०, वाराणसी।
- निरुक्त वेदाङ्ग पुरस्कार, 2003, महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रीयवेदविद्याप्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)।
- सरस्वतीसम्मान, 2003, सांस्कृतिक मञ्च, भिवानी।
- भिवानी गौरव सम्मान, भिवानी परिवार मैत्री संघ, दिल्ली।
- वाल्मीकिपुरस्कार, 2006, हरियाणा संस्कृत अकादमी, पञ्चकूला।
- दधीचिसम्मान, 2011, दिल्ली।
- सांस्कृतिक मञ्च सम्मान, 2012, भिवानी।
- संस्कृत संस्कृति पोषक सम्मान, भिवानी 2013।

जिन्होंने अपने ज्ञान से संस्कृत को शिखर तक पहुँचाया बच्चों से लेकर वृद्ध तक के लिये अनेक ग्रंथ का लेखन किया दरिद्र छात्र-छात्राओं को पुस्तक, फीस आदि से सहायता। सांस्कृतिक मञ्च, रजि०, भिवानी, को सांस्कृतिक सदन के निर्माणहेतु भूखण्ड (621 गज) का अर्पण एवं निर्माण में सहयोग।

निर्धन महिलाओं के लिये गाँवों में सिलाई-केन्द्रों का संचालन, प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों को गणित और हिन्दी का निःशुल्क कोचिंग, विधवाओं एवं दरिद्रों को अन्नादि का दान। कन्या- विवाह, चिकित्सा सहायता, सुकन्या समृद्धि योजना में सहयोग, राष्ट्रीय आपदाओं में प्रधानमन्त्री राहत कोष आदि में समय-समय पर योगदान इत्यादि नरनारायण सेवा के उपक्रमों में निरन्तर सक्रियता एवं सामाजिक आयोजनों में तन- मन- धन से तत्पर रहते थे।

यहां तक की अपना पंडित धर्म निभाते हुए अपना सर्वस्व दान कर दिया तथा जगत हित के लिये उन्होनें अपना शरीर भी दान दे दिया। ऐसे मनीषी को शत् शत् नमन है।

स्मृतिसुमन (आचार्य शिवनारायण शास्त्री का स्मरण)

न रत्नमन्विष्यति मृगयते हि तत्..... आचार्य

जयपाल शास्त्री
सहायक आचार्य चौ. बंसीलाल रा. म. म. तोशाम

रत्न किसी को नहीं खोजता बल्कि रत्न को ही खोजा जाता है। इस सूक्ति को चरितार्थ करने वाले पण्डित शिवनारायण शास्त्री जी आज हमारे मध्य में उपस्थित नहीं हैं, परन्तु उनके द्वारा ज्ञानपिपासु दीपक जो जलाए गए हैं वे आज भी देदीप्यमान हो रहे हैं। पण्डित शिवनारायण शास्त्री जी साक्षात् सरस्वती पुत्र थे। ये अपने विषय के मर्मज्ञ थे। वेद के तत्त्ववेता थे। वे हमेशा अध्ययन और अध्यापन में ही रत रहते थे। लेखन कार्य तो मानो उनके लिए लीला हो। सहज रूप से अपने कार्य में लगे रहते थे। आत्मविश्वास की तो प्रतिमूर्ति थे। शास्त्र निष्णात होने के साथ-साथ विषय के अच्छे प्रस्तोता भी थे। जब भी वे किसी भी विषय पर बोलना प्रारम्भ करते थे तो उस विषय के तत्त्व पर पहुँचना उनके लिए आम बात थी। विषय इतना सरल हो जाता था जब वे बोलना प्रारम्भ करते थे। मुझे वो दृश्य आज भी याद है, जब मैं उनके सान्निध्य में पढ़ रहा था। किसी का फोन आया कि हरियाणा संस्कृत अकादमी की तरफ से सम्मान के फार्म आए हुए हैं। और आप इस सम्मान के योग्य हैं। अतः आप आवेदन को भरने का कष्ट करें। पण्डित शिवनारायण शास्त्री जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मैं स्वयं आवेदन नहीं भरूँगा। यदि आप लोगों का लगता है कि मेरा लेखन कार्य इस योग्य है तो आप स्वयं मेरे पास आएँ और आवेदन भर ले जावें। अन्यथा मुझे इस सम्मान की कोई चाह नही है और अनायास ही उनके मुख से एक सूक्ति निकली –

न रत्नमन्दिष्यति मृगयेत हि तत्।